नदिया के दो किनारे

जीवन के

नीलम (शिखा)

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Neelam(Shikha) 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-670-0

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: January 2026

अनुक्रमणिका

नदियाँ के दो किनारे 1
जादू तुम्हारा 3
अंधियारी राहें 4
समय 5
इश्क अलबेला 6
पिता-प्रणाम 8
सत्य 9
एहसास 11
आशियाना मेरा 12
दूरियाँ 13
मेरी चाहत 14
चंचल मन 16
मेरा किनारा 18
अन्जान रौशनी 19
बरसात 21
मान-सम्मान 22
मंज़िल 23
लंबी ज़िंदगी 24
दुःख – अनेक रूप 25

ज़िंदगी के पहलू... 26
नादान दिल 28
हमारा हक 29
इंतज़ार.. 31
सुहाना दिन 33
वो लम्हे 34
असली-नकली दुनिया 35
चंचल मन.. 36
जीवन की उलझनें... 37
नारी 38
अपने-पराये.. 39
साथी चाहिए 41
एहसास.. 42
धुआँ-धुआँ सा शहर... 43
किस्मत.. 44
ख्वाबों का सिलसिला 46
काश 47
सँभल चुकी हूँ मैं 48
ज़िंदगी सँवारे... 49
स्त्रीत्व की पूर्णता (छलावा) 50

नदियाँ के दो किनारे

नदियाँ के दो किनारे,
क्या कभी मिल नहीं सकते।
चाहे तो भी क्या,
एक-दुजे में घुल नहीं सकते।
ऐसा भला होता है क्या कभी,
कि, जो चाहो मिल जाए।
मगर जो दुआ दिल से की,
कैसे वो खाली जाए।
हो सकते हैं किनारे भी एक,
थोड़ा तो जतन करो।
होंगी कभी मंजिले I
मिलकर जो की कोशिश,
किनारों को मिलाने की।
हो जायेंगी मुश्किलें दूर,
किनारों को पास लाने की।
किनारों का क्या है,
वो मिले ना मिले।
बगिया में जो फूल है,
वो खिले ना खिले।

हमें है जाना,

इन किनारों के पार।

इन किनारों से कह दो,

ना आये हमारे साथ।

जादू तुम्हारा

मुझ पर छाया है; ये कैसा जादू तुम्हारा,
दिन हो या रात; सिर्फ ख्याल है तुम्हारा।
निगाहों में बसी है; तस्वीर तुम्हारी,
दूर कहीं से आती है; कानों में आवाज तुम्हारी।
तुम नहीं हो; फिर भी हो मेरे पास,
जब दूर होते हो; होती है मिलने की आस।
तुम्हारी दोस्ती लगी; मुझे सबसे प्यारी,
तुम्हारी दोस्ती लगी; मुझे दुनिया से न्यारी।
निभाना चाहती हूँ; साथ तुम्हारा जीवन भर,
लगता है; कोई न मुड़कर देखे हमारी तरफ।
मगर क्या करूँ; हूँ मजबूर दुनिया के बंधनों से,
दगा नहीं कर सकती; अपने सभी सगे-संबंधों से।
हर वह चीज; जो है तुमसे जुड़ी,
देखकर याद आती है; वो सभी घड़ी।
तुम जानते हो; मेरी सभी परेशानी,
फिर भी हर बात पर; करते हो अपनी मनमानी।
करते हो वही; प्यार की बातें सारी,
जानते हो नहीं निभानी; सारी ज़िंदगी यह यारी।

अंधियारी राहें

उजाला बहुत है; अभी राहों में,
फिर भी अंधियारा बुलाता है; मुझे अपनी बाँहों में।
मुझे लगता है बहुत डर; इस अंधियारे से,
कोई बुला ले अपने पास मुझे; इन गलियारों से।
हो न जाऊँ; कहीं मैं इसमें लीन,
हो न जाये; मेरा जीवन संगीन।
हो न जाऊँ बदनाम; डर है इसका मुझमें,
खींच रहा लगातार; ये मुझे अपने घर में।
चलना है मुझे अभी; बहुत मील,
करनी है पार; ये सारी लकीर।
जो खींची हैं अंधकार ने; अपने क्षेत्र की,
कराती है मुझे पहचान; अपने कुक्षेत्र की।
खो न जाये ये मेरी पहचान; कहीं इसमें,
क्यों है इतनी विडम्बना; मेरे इस जीवन में।
करना चाहती हूँ सरल, जीवन को; इन सबसे,
पर जानती हूँ होगा नहीं; यह कभी जीवन में।

समय

समय-समय पर; समय है बताता,
अपनी वैल्यू; हमें है समझाता।
चलते रहो तुम; समय के साथ,
साथ छोड़ा; तो मलोगे फिर हाथ।
जिसको भी पड़ती है; समय की मार,
समझ जाता है वो; समय है महान।
समय देवता को; करो तुम प्रणाम,
समय ही करेगा; तुम्हारा उद्धार।
समय पर रहोगे; जो तुम कल और आज,
कल ये समय ही करेगा; तुम्हारा इंतज़ार।
समय की सीमा; सबके लिए है समान,
समय पर जो नहीं; तो पछताओगे यार।
समय की शक्ति को है; मैंने जाना,
समय से दूर रहकर; है मैंने माना।
समय नहीं है; किसी का सारथी,
वह अपना खुद है चालक; नहीं है कोई सारथी।

इश्क अलबेला

खो गई थी मैं; कुछ समय के लिए अंधकारों में,
याद आ गई; मंज़िलें मुझको राहों में।
रुक गई थी मैं; पतन की राह चलते,
होंगे मुझे; अब और जतन करने।
कैसे लौटूँ मैं; इस राह से वापस,
सोच रही हूँ मैं; उस राह पर जाकर।
मन की उत्तेजना थी; कारण इसका,
अब हुआ जाकर हल; सवाल मन का।
मन हुआ शान्त; मिली शान्ति इसको,
किसे दूँ दोष; खुद को या तुझको।
मैं चाहती भी थी; उस समय किनारा,
मिल गये थे तुम; हो गया था जीवन न्यारा।
कुछ तो हनन; हो रहा था मेरा,
मैं न जान सकी; क्या खो रहा था मेरा।
तुमने मुझे पढ़ाई; एक नई परिभाषा,
प्यार की; दोस्ती की; जीवन में नई आभा।
हो गया कब मुझको; तुम पर इतना यकीन,
कि मेरी पैरवी भी न कर सका; मेरे मन का वकील।
मन में था बहुत कुछ; कह न सकी कभी तुमसे,

तूने कह दी; सच्ची-झूठी सभी बातें मुझसे।
मैंने किया तेरी; हर एक बात का यकीन,
सच्ची हो या झूठी; सबको बनाया पत्थर की लकीर।
मिट गई सारी बातें; कही-अनकही,
लकीर तो छोड़ो; अब उस पत्थर का पता नहीं।

पिता-प्रणाम

आपने ही दिया; मुझे सहारा,
आपकी नज़रों से है; दुनिया को जाना।
आपके विश्वास ने है; मुझको अकारा,
आपके गुरुर ने है; मुझे सँवारा।
आप जो रहे; हर कदम पर साथ,
न रहा कभी मुझे; अपने दुःखों का ध्यान।
सभी भूलों पर मेरी; किया क्षमा प्रदान,
गलतियों के किया मेरी; हमेशा दर-किनार।
हर पल दिया मुझे; वही लाड-प्यार,
अच्छाइयों में; बुराइयों में; न मिला मुझे कोई अलग ध्यान।
हर घड़ी को बनाया; इतना खुशहाल,
भूल गई मैं; क्या होता है दुःखों का वार।
आप हो मेरे पिता-प्रणाम!
क्या कहूँ आपके लिए; आप हो कितने महान।

सत्य

चारों तरफ है; झूठ का धुआँ,
सच गया है; खेलने जुआ।
होगा कब; ये खेल खत्म,
आयेगा कब; सत्य इधर।
जिसके इंतज़ार में है; जग सारा,
खोज रहा धुएँ में; सच की आभा।
सच है निर्मल; सच है कोमल,
खोलता वह; सभी के लोचन।
है जिसकी आँखों में; सच की चमक,
नहीं हिलाती उसे; झूठ की धमक।
वह है डिग; अपने पथ पर,
सच के बल पर; सच के बल।
पाता है वह; अपने कर्मों का फल,
भरता नहीं; इसके लिए कोई कर।
इसके विपरीत; जो है निष्कर्म,
भरना पड़ता उन्हें; अपनी निष्कर्मता का फल।
जिसने ली है; सत्य की छाँव,
हरा पाया नहीं उसे; कोई यहाँ।
सत्य को करो; तुम परिभाषित,

रहो सत्य पर; तुम भी आश्रित।

नहीं करेगा सत्य; तुम्हारा बहिष्कार,

कर लेगा तुम्हें; अपने अंदर स्वीकार।

आओगे जो तुम; सत्य के द्वार,

वह स्वयं बुला लेगा; तुम्हें उस द्वार के पार।

करोगे जो तुम; सत्य को स्वीकार,

रहोगे तुम; सदा खुशहाल।

एहसास

एहसास...

बस , यही होना चाहिए थोड़ा,

किसी को, पा लेने का एहसास...

पाकर लताओं की तरह, झूम उठने का एहसास...

अपनी जान से भी ज्यादा, किसी को खो देने का एहसास...

किसी के द्वारा कभी अपमानित न हो जाऊँ, इसका एहसास...

अपनों की खुशियों का एहसास...

उनका, आपके लिए बहुत कुछ कर गुज़रने का एहसास...

एहसास...

खुद को किसी और की साँसों में महसूस करने का,

एहसास...

किसी की अदाओं पर मर मिटने का,

एहसास...

मेरे होने का एहसास...

खुद के होने का एहसास...।

आशियाना मेरा

हम हर दिन; सफर पर रहते हैं,
यादों की उस दुनिया को; अपने ख्यालों में ही नापा करते हैं,
कभी आसमां; तो कभी गर्त; की सैर किया करते हैं,
एक ही पल में,
प्यार की ऊँचाइयों से; नफरत की गहराइयों तक,
गोता गलाया करते हैंI
एक तुम्हारे सिवा;कोई आशियाना ही नहीं था, हमारा कभी,
कि हम आज,उसी आशियाने को,दिन-रात खोजा करते हैं,
आशियाने का अश्क ही नहीं नज़र आता हमें कहीं,
कि उस आशियाने के बाद, गर घर खुदा का भी हो,
तो हम मुस्तरित करते हैं।

दूरियाँ

कभी वक्त नहीं था; औरों के लिए हमारे सिवा,
आज गैरों के बाद भी; वक्त कहाँ है,
कभी दिलों में भी; दूरियाँ न थी एक पल की,
आज उँगलियाँ भी; सिमट कर रह जाती हैं हाथों की,
किसी का भी होना; न गवारा था; कभी हमारे दिल के आशियाने में,
कि आज,
हम खुद ही गुम हैं; इस भीड़ के अंगियारे में,
सिमट कर रह गई है; उम्मीदों की चादर,
कि कोई आता ही नहीं; इस दिल के गलियारे में,
माना आज हैं हम मशगूल; एक बड़ी जिम्मेदारी में,
मगर आपने तो खुद को ही महफ़ूज़ कर लिया; हमारी जिम्मेदारी से,
हमें थी आपकी ज़रुरत; जिस वक्त सबसे ज्यादा,
आपने चंद लोगों से; खुद का घेराव कर लिया, हमसे ज्यादा।

मेरी चाहत

कहने को तो लोग बहुत हैं,
मगर अपना कोई नहीं।
दिखाई तो देती है,
पूरी दुनिया आस-पास,
मगर दूर-दूर तक परछाई नहीं।
आज हम अकेले हैं,
तुम्हारे होते हुए भी,
कहीं कोई एक दिन,
ऐसा न हो,
कि तुम मुझे ढूँढो,
और पाओ ही नहीं।
आज भी मरते हैं; तुम पर,
भरोसा खुद से ज्यादा; करते हैं तुम पर,
प्यार की सरहदें; आज भी कुछ नहीं हैं,
मगर,
तुम वो नहीं हो, तुम वो नहीं हो।
जिसे चाहा था मैंने,
बस चाहत समझकर,
जिसे जाना था मैंने,

खुद की परछाई समझकर,

आज अंधेरा; इतना घना है,

कि परछाई क्या,

अपनी समझ भी खो गई।

चंचल मन

करना क्यों; किसी का गुनगान,
चाहे भले हो; वो औरों के समान।
लगती है क्यों; ये पुरानी पहचान,
होकर के; एक-दूसरे से अंजान।
करता क्यों; उसी पर अभिमान,
जो करता; उसका अपमान।
पाकर धोखा; उसी के हाथ,
क्यों होता है ये; इतना उदास।
करता है दिल; वादे हज़ार,
कि अब न बँटेंगे; हमारे विचार।
फिर क्यों नहीं रहता; यह चुपचाप,
आती है जब उधर से; संवाद की बहार।
करता फिर वही काम,
कर लेता फिर; उस पर विश्वास,
पाकर धोखा; उससे हज़ार।
मिलाता है फिर;
उसी से अपने विचार,
मैं हूँ कहाँ; उसके हाथ।
मेरा है मन; मगर रहता उसके पास,

करता तब भी; उसी की बात।

हो गया मुझसे अंजान;

बना करके नई पहचान।

मेरा किनारा

बीच मझदार में है; नाव मेरी,
किस पार लगेगी; न जाने कोई,
मेरा है; कौन सा किनारा,
जिसे है मैंने माना,
या,
जिसे है मैंने जानाI
माना है इस किनारे को अपना,
मैंने इसे देखकर,
जाना है उस किनारे के बारे में,
मैंने उस पर रह कर,
क्यों लगता है मुझे,
अपना वो किनारा,
जिसके बारे में,
सिर्फ बुरा है; मैंने जाना,
जिस किनारे को;
मैंने है पहचाना,
क्यों लगता है वो;
अभी भी अनजानाI

अन्जान रौशनी

क्यों करता है कोई;
किसी को इतना प्रेम,
कि उसको छोड़ने में;
हो कष्ट अनेक,
जब कोई उड़ाये;
आपके प्रेम का मजाक,
तब कैसे हो आपको;
उस पर विश्वास,
जब कोई करे;
आपकी दोस्ती का अपमान,
तब कैसे हो आपको;
उस पर अभिमान,
था अभिमान मुझे;
अपने सभी दोस्तों पर,
नहीं पता था;
करेंगे आघात, सभी मुझ पर,
आघात ऐसा;
जिसमें न चोट, न खरोंच,
मगर हृदय को आयी;

बहुत गहरी चोट,
कहीं दूर से;
एक रौशनी की किरण है आती,
जो मुझे अपनेपन का;
एहसास है कराती।

बरसात

इस भीनी बरसात का;

मज़ा ही कुछ और है,

ऐसे में तेरे साथ को;

जीना ही कुछ और है,

बरसात लायी है अपने साथ;

खुशियों की बौछार,

इन खुशियों को पा लेने का;

मज़ा ही कुछ और है,

बारिश की बूंदे;

करती है जो वार,

उस वार को सह जाने का;

मज़ा ही कुछ और है,

बारिश की हम;

तुम्हें क्या बताएं बात,

बार-बार भींग जाने का;

मज़ा ही कुछ और है।

मान-सम्मान

जोड़ो मत; मुझे अपने साथ,
कर दो बस तुम; मुझे आज़ाद,
जाने दो मुझे; अपनों के साथ,
पा लेने दो मुझे; अपनों का प्यार,
मत खींचो मुझे; अपने द्वार,
जहाँ है सिर्फ; अपमान ही अपमान,
करो हमेशा; वही काम,
जो दिलाये तुम्हें; समाज में मान,
जब होगा; तुम्हारा मान;
होगी तुम्हारी; अपनी पहचान,
पहचान को पाकर; रहोगे तुम खुश,
फिर कभी नहीं सहोगे, कोई दुःख।

मंज़िल

सफर लंबा है, जाना ज़रुरी है,
जाना कहाँ है, ये नहीं पता है।
हैं कहाँ मंज़िल, आयेगी कब यहाँ,
इसका पता नहीं मुझे, हूँ मैं लापता।
लापता का अर्थ, जानते हो क्या तुम,
इस जहां का अंत, पहचानते हो क्या तुम।
अंत है अनर्थ, अंत को मत खोजो,
हो रहा विनाश, उसे मत रोको।

लंबी ज़िंदगी

ज़िंदगी नहीं है सिर्फ; जीने का नाम,
कैसे जिएं हम उसे, खुलकर दिन-रात।
जब न हो किसी; अपने का साथ,
जब न हो कोई, खुशी हमारे साथ।
ज़िंदगी हो जाती है; कितनी लाचार,
जैसे चौराहे पर हो, मिठाई की दुकान।
दुकान पर लगता है; हर चीज का दाम,
काश मिल जाते कुछ, इस ज़िंदगी के नाम।
ज़िंदगी है तो, मगर है, किस काम,
हो जाती है ये, मीलों पत्थर समान।

दुःख - अनेक रूप

दुःख के हैं; रूप अनेक,
कभी,
जब दुःखी होता है; मन,
नहीं करता है, कोई कर्म।
पूछता; क्या है जीवन,
न कोई रस, न कोई विरस।
लगता है; सब कुछ अचल,
चलो, चले कहीं हम।
जहाँ न हो; कोई जग,
न कोई रस, न कोई विरस।
न होगा सुख; न अनुभव होगा दुःख,
दुःख देने वाले हैं; अनेक यहाँ,
देखोगे तुम, कहाँ-कहाँ।

ज़िंदगी के पहलू

ज़िंदगी क्या है,
जीने का नाम,
इसे तुम जियो,
खुलकर मेरे यार,
ज़िंदगी में कभी,
कोई शिकवा न करना,
अगर दोस्तों से भूल हो,
तो गिला न करना,
गिले-शिकवे भूलकर,
जी लेना ज़िंदगी यूँ ही,
हँसकर दुःखों का जहर,
पी लेना यूँ ही,
दुखों का क्या है,
आज है कल नहीं,
खुशियों भरा वक्त,
आता है फिर वही,
दुःखों के बिना,
कहाँ होती है, सुखों की पहचान,
दुःख और सुख,

जीवन के दो पहलू हैं, मेरे यार।

नादान दिल

बीती बातें; याद आती हैं,
वो मुलाकातें; याद आती हैं,
जो न की हमने कभी;
वो बातें याद आती हैं,
क्या करूँ?
इस नादान दिल का,
कभी जो न मिल सकेगी,
वो हसरतें याद आती हैं,
हुआ जो कई बरस पहले,
पर लगती अभी... कल की ही बात,
याद आती है,
नहीं जाती; जो मेरे दिल दिमाग से,
घर कर गई; वो बातें याद आती हैं,
मुझे रुलाती; मुझे सताती,
वो एहसासों की लड़ी,
याद आती हैं।

हमारा हक

हमारा हक
तुम ले नहीं सकते,
हमारा वक्त;
किसी को दे नहीं सकते,
पूरा जीवन है तुम्हारा;
मेरे लिए,
इस बात से इंकार;
तुम कर नहीं सकते,
वजह चाहे जो भी हो,
किसी भी तकरार की,
हम तुम्हारे बिना,
और,
तुम हमारे बिना;
रह नहीं सकते,
हम तुम्हें देते हैं;
तुम्हारे जीवन का,
कुछ समय,
ये उधार है तुम पर,
इसे तुम चुका नहीं सकते,

तुम लाख बार हमें;
अपने घरौंदे से निकाल दो,
मगर, हम तुम्हारे सपने में भी,
खो नहीं सकते।

इंतज़ार

कि कोई समझता ही नहीं...

कि कभी,

किसी की ज़रूरत;

थी ही नहीं,

जिसका इंतज़ार रहता है; हर घड़ी,

कि वो शख्स कभी;

आता ही नहीं,

जिसकी एक नज़र को;

तरसते हैं हम,

कि वो आँखें कभी;

हमें देखती ही नहीं,

जिस एहसास को हम;

जीना चाहते हैं,

कि वो एहसास शायद;

अब जिंदा ही नहीं,

हम नहीं भूले;

प्यार को...

कि किसी को;

इसके अलावा सब याद है,

नहीं जिया जाता; तन्हा,
इस गुमनाम; सड़कों पर,
कि किसी का;
हाथों में हाथ होना ही,
काफी होता था,
वीरानों में भी।

सुहाना दिन

बहुत खुश थे हम; कई दिनों से,
लगा कि...
वो बरसात; लौट आयी है,
वो बरसात; खिलखिला उठी है,
सब कुछ बस; सुहाना सा हो गया था,
हम इन सबको; महसूस ही कर रहे थे,
कि...
पतझड़ आ गया,
और...
फिर वही उदासी छा गई...
हम एक बार फिर से, मायूस हो गये।

वो लम्हे

अब तो; शिकायत भी नहीं की जाती

कि,

उनको दूर कौन करेगा?

फिर वही पल; जीने का मन करता है,

वो लम्हे; जिनमें हम खुद को,

सिर्फ और सिर्फ; तुम्हारा महसूस करते थे,

वो लम्हे; जिनमें हम, इस दुनिया से दूर,

और खुद को; तुम्हारे पास, महसूस करते थे,

वो लम्हे; जहाँ मेरे अलावा. कोई नहीं था तुम्हारे पास,

वो लम्हे, जहाँ हम खुद को, सबसे खुशनसीब समझते थे।

असली-नकली दुनिया

हम आज भी;
फर्क नहीं कर पा रहे,
सच और ख्वाबों में,
ख्वाबों की दुनिया में;
इतने साल गुज़ारने के बाद,
अब इस असल ज़िंदगी में;
मन लगाना मुश्किल है,
उस दुनिया में तो;
मैंने खुद को हमेशा,
जवां, खिलखिलाता हुआ;
और खुश देखा था,
असल दुनिया में;
न तो हम जवां हैं,
और न ही खुश।

चंचल मन

क्यों है मन इतना चंचल,
कभी भागता इधर, कभी उधर,
क्यों है मन की गति इतनी,
कभी चलता इधर, कभी उधर,
क्यों है इसमें आवेग इतना,
कभी कूदता इधर, कभी उधर,
करता इसको वश में वो,
मन का है, परमेश्वर जो,
तुम भी बनो, मन के ईश्वर,
करो काबू तुम, इसके ऊपर।

जीवन की उलझनें

ज़िंदगी की राहें, बहुत है मुश्किल,
इसको सरलता से जीना, नहीं है मुमकिन,
तुम भी अपनाओ, ज़िंदगी की राहों को,
फिर बताओ अपने विचार, हमारे यारों को,
तुमने भी देखी है, ज़िंदगी में मुश्किलें,
हुई है, तुम्हारे जीवन में भी अड़चनें,
सिखाओ हमें भी जीवन जीने की कला,
कल हम रहें न रहें, तुम्हें याद आयेंगे सदा,
अभी देखनी है, जीवन की बहुत सारी उलझनें,
तुम ही सुलझा सकते हो, इन उलझनों की सुलझनें,
उलझ गई है ज़िंदगी, इन उलझनों के बीच,
कि सुलझाना मुश्किल है, इसे तुम्हारे बिन
तुम हो साथ, तो उलझनें हैं क्या चीज़,
अपने आप खुल जायेगी, बड़ी से बड़ी जंजीर।

नारी

क्या है नारी, मैंने न जाना,
होकर नारी, खुद, उसको न पहचाना,
चाहती क्या है, वह औरों से, यह भी न जाना,
पर लुटा देती, अपना सब कुछ, है मैंने माना,
माना वह हो थोड़ी मूर्ख, प्रेम के संबंधों में,
पाना चाहती है, अघात प्रेम, अपने सभी सगे-संबंधों से,
पर नहीं जानती ये सारे, प्रेम की है क्या रीति,
देना है जिसमें, लेना कुछ भी नहीं,
प्रेम की है परिभाषा क्या, यह परिभाषित नहीं,
जिसने किया परिभाषित इसे, उसे प्रेम की आशा नहीं,
नारी को समझना, नहीं है इतना दुष्कर,
हृदय में देखो तुम, उस नारी के जाकर।

अपने-पराये

सितारों की इस दुनिया में,
ये आसमान और भी है,
चलता चल मुसाफिर,
ये जहां और भी है,
इस जहां ने दी है,
इतनी सारी खुशियाँ,
इन खुशियों को पा ले,
अभी खुशियाँ और भी है,
हाथ में आये,
जो मुट्ठी भर रेत,
ये रेत नहीं है,
है खुशियों का ढेर,
इन खुशियों पर बैठे हैं हम,
पंख फैलाये,
इस जहां में,
कुछ अपने हैं, कुछ पराये,
अपने से मिला; बेइंतेहा प्यार,
परायों ने दिया; एक नए रिश्ते को अंजाम,
अपने पराये, होते हैं क्या चीज़,

जो रिश्ते दिल से जुड़े,

वो ही है पक्की जंजीर।

साथी चाहिए

हम अकेले नहीं चल सकते,

कि अब आदत नहीं रही अकेले सफर करने की,

कोई साथी चाहिए,

कि अब उम्र नहीं रही,

दोस्तों संग हँसी-ठिठोली करने की।

एहसास

समन्दर खाली सा; हो गया भावनाओं का,
नदियाँ सूख सी गई हैं; खुशी और गमों की,
कुछ एहसास था; जो बहुत प्यारा था,
इस जीवन में...
कि एहसास की कड़ियाँ; टूट सी गई है,
अपने ही आँगन में।

धुआँ-धुआँ सा शहर

धुआँ-धुआँ सा है ये शहर,
कि है सब, मगर दिखता कुछ नहीं,
सोशल मीडिया के इस गलियारे में ,
बिकता सब है, मगर मिलता कुछ नहीं,
बिक रही है आस्था, बिक रहा है प्यार,
बिक रही है सलाह,
लेते हैं सब,
जहन में बसाता कोई नहीं,
हम चले हैं, उस पथ पर,
कि राहें बहुत हैं, पर अपनाता कोई नहीं।

किस्मत

जाने भी दो;

उन बातों को,

जिसका निशां ही;

कल न हों,

लगाओ न दिल में;

उन यादों को,

जिसमें शामिल;

हम ही न हों,

निगाहों में;

वो तस्वीर है बसी,

जिसका हकीकत में;

कभी आना ही न हो,

फिर भी क्यों दिल में,

उम्मीद है जगी,

जिसे पूरा कर पाना,

हमारे वश में ही न हो

हो गई एक,

छोटी सी नादानी हमसे,

दिल लगाया उससे,

जिसे हासिल करना,
हमारी किस्मत में ही न हो,
किस्मत के खेल हैं निराले,
उन खेलों को समझना,
हमारे वश में कहाँ हो।

ख्वाबों का सिलसिला

ख्वाबों का सिलसिला...

हकीकत बन चला था...

हम वही थे,

हमारा अश्क बढ़ चला था,

भूल करके,

खुद की परछाई को...

हमारा साया,उनके साथ उड़ चला था...

ख्वाब को असल में जीने का,

इतना हौसला हमारा,

बढ़ चला था...

भूल के इस दुनिया के तौर-तरीकों को...

मन हमारा हवाओं से भी ऊपर,

उड़ान भर चुका था।

काश

काश कि तुम, मिलते मुझे कभी तो...

काश कि तुम होते मेरे पास, एक पल को भी तो...

काश होती मुलाकातें, मिलने के लिए भी तो...

काश...

कि...

हमारा याद करना, तुम्हें दिखता दो पल को भी तो...

काश कि सो पाते हम चैन की नींद,

कभी किसी रात...

काश कुछ कह पाते,

कुछ सुन पाते, तुम्हारे साथ...

काश...

सँभल चुकी हूँ मैं

हम अकेले से हैं,
इस महफिल में सालों बाद
कि हमें पहचानने वाला वो शख्स,
गुम सा है कहीं,
कि उसके बिना,
ज़िंदगी हमारी बेरंग सी है,
रंगों का मतलब ही,
उसका होना सा है,
कि बहुत डरा हुआ,
महसूस करती हूँ मैं,
शायद इसलिए खुद को,
ज्यादा मज़बूत रखती हूँ मैं...
मगर असल में,
बिखर चुकी हूँ मैं,
गिर-गिरकर,
सँभल चुकी हूँ मैं।

ज़िंदगी सँवारे

झूमती हैं बहारे,
झिलमिलाते हैं ये सितारे,
गुनगुनाती है नदियाँ,
लहराते हैं किनारे,
आओ ज़िंदगी को हम,
अपने हाथों सँवारे,
हम हों, तुम हो,
ज़िंदगी के साथ,
यूँ ही रहे सदा,
हाथों में हाथ,
होगी कभी जो,
जीवन में मुलाकात,
चलोगे कभी तो तुम,
मेरे साथ,
अपने भविष्य को हम,
खुद निखारें,
आओ चलो,
ज़िंदगी सँवारे।

स्त्रीत्व की पूर्णता (छलावा)

जी करता है,
तेरे पास आ जाऊँ,
तुझे अपनी बाँहों में लेकर...
झूला मैं झूल जाऊँ,
इन भटकते नैनों को,
शांत कराऊँ,
इन अधरों की मैं,
प्यास बुझाऊँ
जी करता है,
तुझे मैं गले लगाऊँ
इन केशों को तेरे हाथों में दूँ,
मैं रस का प्याला भर लाऊँ,
माँग में चाँद-सितारे सजाऊँ,
इन स्तनों से अमृत बरसाऊँ,
इस अमृत को,
किसी का आहार बनाऊँ,
बनके दासी, मैं सेवा में लग जाऊँ,
जाऊँ जहाँ, वहाँ माता होने का सुख पाऊँ,
तेरी ही अर्धांगिनी, सदा कहलाऊँ,

तेरी सेवा कर मैं, तुझ पर वारी जाऊँ,
तुझको बनाकर अपना,
सब कुछ तुझ पर लुटाऊँ।